DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor
(Guest faculty)
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College,
Bara Chakia,
BRABU-Muz-pur

B.A. (Hons.), part – II

Subject – Sanskrit

paper – IV

7×2 = 14 Marks

# अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

## संस्कृत श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद

**2**

यदालोके सूक्ष्मं व्रजति सहसा तद्विपुलतां
यदर्द्धे विच्छिन्नं भवति कृतसंधानमिव तत्।
प्रकृत्या यद् वक्रं तदपि समरेखं नयनयो-
र्न मे दूरे किञ्चित्क्षणमपि न पार्श्वे रथजवात्॥
(अभि० 1/9)

अनुवाद:–

वृक्ष आदि जो वस्तु पहले छोटी दिखायी देती है, वही एकाएक बड़ी हो जाती है। जो वृक्ष-पंक्ति आदि जो बीच में खण्डित है, वह भी रथ के वेग से मिली हुई सी दिखाई देती है और जो स्वभाव से टेढी-मेढी है, वह वस्तु भी आँखों को सीधी दिखाई पड़ती है। अधिक क्या कहूँ, इस रथ के वेग के कारण कोई वस्तु मुझसे दूर नहीं तथा न कोई वस्तु मेरे पास ही ठहरती है। अर्थात् रथ के वेग के कारण जो वस्तु पास में है, वही क्षणभर में दूर चली जाती है।